# घोघरडीहा प्रखंड स्वराज्य विकास संघ जगतपुर,मधुबनी,बिहार
## मेघ पाईन अभियान
# वंचितों को समाज के मुख्य धारा से जोडा
## केस स्टडी वर्ष 2010

नाम– मधुरी मल्लिक
पिता– जीवु मल्लिक
जाति– डोम ;महादलितद्ध
गॉव– हरिना
प्रखंड–अंधराठाढ़ी
जिला– मधुबनी
परिवार के सदस्यों की संख्यां–
पुरूष–4 महिला–2 कुल–6

गॉव में जातिगत परिवार की संख्या

दुसाघ –25 परिवार; यादव –15 परिवार; हलवाई –6 परिवार; केबट –4 परिवार;
मुसलमान –25 परिवार; डोम –4 परिवार;
कुल –79 परिवार

## परिवारिक स्थिति

मधुरी मल्लिक अपने पति के साथ पारम्परिक पेशा सुअर पालन एवं मौसमी बॉस का समान बनाकर एवं बेचकर अपने परिवार का भरन–पोषण करती थी। कम जमीन होने के कारण घर के नजदीक ही सुअर का रहने का जगह भी बनायी थी जिसके कारण इनके घर के आस–पास काफी गंदगी रहा करता था तथा गंदगी के कारण दूषित जल पिते थे। इन लोगों के परिवार का सभी सदस्य पेट संबंधी विमारी गैस्ट्रीक एवं डायरिया से पिड़ित रहा करते थे। डोम जाति के हेाने के कारण समाज में यह उपेक्षित किये जाती थी। समाज के अन्य वर्ग के लोग ने इन्हें अपने साथ बैठने देते थे न हीं इनके साथ सही व्यवहार करते थे। पेट संबंधी बिमारी के कारण यह सालाना 6000.00 से 8000.00 रूपया खर्च करते थे। अधिकतर ईलाज के लिए इन्हें महाजनों से ब्याज पर कर्ज लेने पड़ते थे । इनकी स्थिति काफी दयनीय थी एवं गरीबी जिन्दगी जिते थे।

मेघ पाईन अभियान के द्वारा इन लोगों को शुद्ध पेयजल उपलब्धता एवं व्यवस्थापन पर जब यहॉ कार्यक्रम शुरू किया गया तो सर्वेक्षण में पाया गया कि यहॉ के व्यक्ति गंदगी के कारण

तथा पानी जॉच के द्वारा पाया गया कि दुषित जल के कारण पेट एवं अन्य विभिन्न जल जनित विमारी से ग्रसित है फिर मेघ पाईन अभियान ने समग्र जल प्रबंघन के द्वारा शुद्ध पेय जल व्यवस्थापन एवं भंडारण के लिए विभिन्न कार्यक्रम के तहत प्रत्येक गॉव में समिति गठन कर इसपर विस्तृत जानकारी एवं जन चेतना प्रदान करना शुरू किया। इन्होंने घर–घर जाकर संदेश दिया कि बर्षा जल सबसे शुद्ध जल है, मटका फिल्टर के द्वारा दुषित पानी को शुद्ध किया जा सकता है तथा पुराने समय का बनाया हुआ कुऑ का भी साफ करके उसका शुद्ध पानी का उपयोग किया जा सकता है तथा विमारी में खर्च होने वाले पैसा का बचत किया जा सकता है।

मेघ पाईन अभियान के द्वारा 2007 में कार्यकर्त्ताओं के द्वारा सर्वेक्षण के दौरान पाया गया कि इनके परिवार के लोगों को दुषित जल एवं गंदगी के कारण विभिन्न बिमारी से ग्रसित है फिर इन्हें मटका फिल्टर एवं बर्षा जल संग्रहन व्यवस्थापन एवं उपयोगिता के बारे में विस्तृत जानकारी दिये तथा इन्हें विमारी में खर्च होने वाले पैसे की बचत का विश्वास दिलाया इनके यहॉ मटका फिल्टर लगवाया तथा इनको गठित समिति का सदस्य भी बनाया। इन्हें कार्यक्रम के तहत बनने वाला जल कोठी बनाने का भी प्रशिक्षण इनके पति को दिया जिससे इनकी आर्थिक स्थिति में सुधार हो।

माधुरी मल्लिक ने मटका फिल्टर का उपयोग एवं बरसात के समय वर्षा जल का प्रयोग एवं भंडारण करने लगा धीरे–धीरे अपने पुरे परिवार में भी इसका प्रयोग करवाने लगा जिससे पाया कि उनके परिवार के सदस्य जो पेट संबंधी बिमारी से ग्रसित थे ठीक हो गये जिससे इनकी बिमारी में खर्च होने बाले 6000.00 से 8000.00रूपया बचत होने लगा जिसका प्रयोग वह विकास कार्य एवं अपने बच्चों को शिक्षा में लगाने लगा। वे अब अपने बच्चों को ट्यूशन भी लगाता है। मेघ पाईन समिति के सदस्य होने के कारण इन्हें समाज में भी प्रतिष्ठा मिलने लगा। आज यह समाज में सभी जगह सभी के साथ बैठ–उठ कर रहे हैं। पहले उनको चौक–चौराहे पर भी उनको अपने से दूर बैठाया जाता था परन्तु आज सभी के साथ एक जगह बैठकर चाय पीते है खुद को समाज का एक अंग मानते हैं। यह अपने लिए जलकोठी बनाकर बर्षा जल का संचय करते हैं। तथा जरूरत पड़ने पर अन्य व्यक्तियों को भी पिलाते हैं। अन्य समय में मटका फिल्टर का प्रयोग कर पानी पीते हैं। मेघ–पाईन अभियान के द्वारा जलकोठी एवं जल घड़ा बनाने का प्रशिक्षण प्राप्त करने के बाद जलकोठी एवं जल घड़ा बनाकर बेचकर अच्छी आमदनी प्राप्त कर लेते हैं।

मेघ पाईन अभियान के द्वारा चलाये गये कार्यक्रम एवं जन चेतना के तहत माधुरी मल्लिक साफ–सफाई, जल स्वच्छता,शुद्ध जल के भंडारण एव उपयोग के विषय का जानकारी अपने समाज में देती है और बतलाती है कि शुद्ध जल से बहुत ही विमारी ठीक हो जाता हे। आज यह पूरे परिवार वर्षा जल एवं मटका फिल्टर का उपयोग कर स्वस्थ जीवन जी रहा है। जल कोठी एवं जल घड़ा बनाकर बेचकर अपना आय श्रोत को अच्छा कर चुकी है। समाज से छुआ–छुत भी समाप्त हो गया यह समाज के मुख्य धारा के साथ जुटकर चल रहे हैं सुअर को अपने घर से दूर ही रखती है तथा साफ–सफाई पर विशेष ध्यान देती है।